६. क्षेत्रानुगम-विषय-सूची

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	१	
	विषयकी उत्थानिका	१-९
१	धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा	१
२	क्षेत्रानुगमकी अपेक्षा निर्देश भेद-कथन	२
३	क्षेत्रानुयोगद्वारके अवतारकी उपयोगिता	,,
४	निक्षेपकी उपयोगिता, उसका स्वरूप और भेद, तथा निक्षेपोंका नयोंमें अन्तर्भाव	२-७
५	क्षेत्रशब्दकी निरुक्ति, एकार्थ-वाचक नाम, तथा निर्देशादि छह अनुयोगद्वारोंसे क्षेत्रपदार्थका निर्णय	७-८
६	लोकशब्दका निरुक्ति, भेद और उसका स्वरूप	९
७	क्षेत्रानुगमका अर्थ तथा निर्देशका स्वरूप	,,
	२	
	ओघसे क्षेत्रानुगमनिर्देश	१०-५६
८	मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्रनिरूपण	१०
९	लोक पदसे घनलोकका ही अभिप्राय है, इस बातका शंका-समाधानपूर्वक समर्थन	१०-११
१०	अन्य-आचार्य-प्ररूपित मृदंगाकार लोकके प्रमाणका निरूपण और तत्सम्बन्धी घनफल निकालनेके लिए सूर्पाकार, आयतचतुरस्र, त्रिकोण आदि अनेक आकारोंकी कल्पना तथा उनके प्रमाणका निर्णय आदि	१२-१८
११	मृदंगाकार लोक घनलोकके संख्यातवें भाग है, यह बतलाकर घनलोकको ही प्रमाणलोक या द्रव्यलोक माननेमें युक्ति	१८-१९
१२	लोकका आयाम, निष्कम्भ और उत्सेधका निरूपण	१९-२०
१३	लोकका तीनसौ तेतालीस घन-राजु न माननेपर दो सूत्रगाथा-ओंके अप्रमाणताका अनिष्टा-पादन	२०-२१
१४	असंख्यातप्रदेशी लोकमें अनन्त जीव कैसे रह सकते हैं, इस आशंकाका परिहार	२२-२४
१५	आकाशकी अवगाहना शक्तिका निरूपण	२४-२५
१६	जीवोंकी स्वस्थान, समुद्घात और उपपाद, इन तीन अवस्था ओंके भेद स्वरूपका वर्णन	२६-३०
१७	स्वस्थानस्वस्थान, विहार-वत्स्वस्थान, सात समुद्घात और उपपाद, इन दश अवस्थाओंके द्वारा यथासंभव मिथ्यादृष्टि आदि चौदह जीवसमासोंके क्षेत्र-निरूपणकी प्रतिज्ञा, तथा स्वस्थानस्वस्थान आदि राशि-योंका प्रमाण-निरूपण	३१
१८	अधोलोक और ऊर्ध्वलोकका प्रमाण	३२
१९	त्रसकायिक पर्याप्तराशिके संख्यातवें भाग-प्रमाण विहार-वत्स्वस्थानराशिका गुणकार संख्यात घनांगुल कैसे जाना ? इस शंकाका समाधान	३३
२०	भ्रमरक्षेत्रके निकालनेका विधान	३४

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
२१	गोम्हिक्षेत्रके निकालनेका विधान	३४
२२	शंखक्षेत्रके निकालनेका विधान	३५
२३	महामत्स्यक्षेत्रके निकालनेका विधान	३६
२४	तिर्यग्लोकका स्वरूप	३७
२५	वैक्रियिकसमुद्घातगत मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र निरूपण	३८
२६	देव अपने अवधिज्ञानके क्षेत्रप्रमाण विक्रिया करते हैं, ऐसा कहनेवाले आचार्योंके कथनका निराकरण	,,
२७	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके क्षेत्रका वर्णन	३९–४७
२८	देव, मनुष्य और नारकियोंका उत्सेध क्रमशः दश, नौ और आठ तालके प्रमाणसे कहा गया है, इस बातका निरूपण	४०
२९	ऊर्ध्वलोक, अधोलोक और तिर्यग्लोकका प्रमाण-वर्णन	४१
३०	सूक्ष्मपरिधि निकालनेका कारण-सूत्र	४२
३१	भरत, ऐरावत और विदेह-सम्बन्धी प्रमत्तसंयतादि संयमी जीवोंकी जघन्य और उत्कृष्ट अवगाहनाके प्रमाणका निरूपण	४५
३२	तैजससमुद्घात क्षेत्रका प्रमाण	४७
३३	सयोगिकेवलीके क्षेत्रका निरूपण	४८
३४	दंडसमुद्घातगत केवलीका क्षेत्र	,,
३५	कपाटसमुद्घातगत केवलीका क्षेत्र	४९
३६	प्रतरसमुद्घातगत केवलीका क्षेत्र	५०
३७	लोकके चारों ओर स्थित तीनों वातवलयोंके क्षेत्रफलका निरूपण	५१–५५
३८	लोकपूरणसमुद्घातगत केवलीका क्षेत्र	५६
	३	
	आदेशसे क्षेत्रप्रमाणनिर्देश	**५६-१३८**
	१ गतिमार्गणा	**५६-८१**
	(नरकगति)	**५६-६६**
३९	सामान्य नारकियोंका क्षेत्र	५६
४०	नारकियोंकी अवगाहना	५७
४१	प्रथम पृथिवीके तेरहों पटलोंके नारकियोंकी ऊंचाई	५८
४२	द्वितीय पृथिवीके ग्यारहों पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई	५९
४३	तृतीय पृथिवीके नौ पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई	६०
४४	चतुर्थपृथिवीके सातों पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई	६१
४५	पंचम पृथिवीके पांचों पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई	,,
४६	छठी पृथिवीके तीनों पटलोंके नारकोंकी ऊंचाई	६२
४७	सातवीं पृथिवीके नारकोंकी ऊंचाई	,,
४८	नारकियोंके क्षेत्रको निकालनेके लिए अर्थपदका निरूपण	६३
४९	सातों पृथिवीयोंके नारकियोंका क्षेत्रवर्णन	६५
	तिर्यंचगति	**६६–७३**
५०	तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र	६६
५१	सासादनगुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तकके प्रत्येक गुणस्थानवर्ती तिर्यंचोंका क्षेत्रप्रमाण	६७
५२	पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंचपर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीवोंका मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तकके क्षेत्रका निरूपण	६९

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
५३	लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रियतिर्यंचोंका क्षेत्र	७३
	(मनुष्यगति)	७३-७७
५४	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियोंके क्षेत्रका वर्णन	७३
५५	सयोगिकेवलीका क्षेत्र	७५
५६	लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंका क्षेत्र	७६
	(देवगति)	७७-८१
५७	मिथ्यादृष्टि आदि चारों गुणस्थानवर्ती सामान्यदेवोंका क्षेत्र	७७
५८	भवनवासी देवोंसे लेकर नव ग्रैवेयक तकके चारों गुणस्थानवर्ती देवोंका क्षेत्र	,,
५९	भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके शरीरकी ऊंचाईका वर्णन	७९
६०	नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंका क्षेत्र	८१
	२ इन्द्रियमार्गणा	८१-८७
६१	सामान्य एकेन्द्रिय, बादर एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय और इन तीनोंके पर्याप्त तथा अपर्याप्तक जीवोंके क्षेत्रोंका वर्णन	८१
६२	वैक्रियिकसमुद्घातगत एकेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण, तथा उनका क्षेत्रनिरूपण	८२
६३	स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातगत बादरएकेन्द्रिय और बादरएकेन्द्रियपर्याप्त जीवोंके क्षेत्रका निरूपण	८३
६४	सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त विकलत्रय जीवोंके स्वस्थानादि क्षेत्रोंका निर्णय	८५
६५	पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्तकोंके सभी गुणस्थानोंका क्षेत्र-निरूपण	८६
६६	लब्ध्यपर्याप्तक पंचेन्द्रिय जीवोंके क्षेत्रका वर्णन	८७
	३ कायमार्गणा	८७-१०२
६७	पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, तथा बादरपृथिवीकायिक, बादर-अप्कायिक, बादरतेजस्कायिक, बादरवायुकायिक, बादरवनस्पति-कायिकप्रत्येकशरीर और इन पांच बादरोंके अपर्याप्त, सूक्ष्मपृथिवी-कायिक, सूक्ष्मअप्कायिक, सूक्ष्म-तेजस्कायिक, सूक्ष्मवायुकायिक, तथा इन चार सूक्ष्मोंके पर्याप्त और अपर्याप्तक जीवोंके क्षेत्रका निरूपण	८७
६८	रत्नप्रभादि सातों अधस्तन तथा उपरितन ईषत्प्राग्भार, इन आठों पृथिवीयोंके आयाम, विष्कम्भ और बाहल्यका वर्णन	८८-९१
६९	पृथिवीयोंमें सर्वत्र जल नहीं पाया जाता है इसलिए जल-कायिक जीवोंका सर्वत्र पृथिवी-योंमें रहना संभव नहीं है, इस शंकाका समाधान	९२
७०	बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीरपर्याप्तक जीवोंका क्षेत्र-वर्णन	९३
७१	वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर पर्याप्तकी जघन्य अवगाहनासे द्वीन्द्रियपर्याप्तकी जघन्य अवगाहना असंख्यातगुणी है, इस	

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	बातकी सिद्धिके लिए वेदना-क्षेत्रविधानमें कहे गये अवगाहना-दंडकका अवतरण	९४-९८
७२	बादरनिगोदप्रतिष्ठित पर्याप्त जीवोंके सूत्रमें नहीं कहनेका कारण	९९
७३	बादरवायुकायिक पर्याप्त जीवोंके क्षेत्रका निर्णय	"
७४	बादर, सूक्ष्म तथा पर्याप्तक और अपर्याप्तक वनस्पति-कायिक वा निगोद जीवोंके क्षेत्रका निरूपण	१००
७५	मिथ्यादृष्टयादि अयोगिकेवल्यन्त त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीवोंका क्षेत्र-वर्णन	१०१
७६	लब्ध्यपर्याप्तक त्रसजीवोंका क्षेत्र-वर्णन	"
	४ योगमार्गणा	१०२-१११
७७	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी जीवोंके क्षेत्रका निरूपण	१०२
७८	वैक्रियिकसमुद्घातगत, मारणान्तिकसमुद्घातगत, तथा मूर्च्छित जीवोंका मनोयोग और वचनयोग कैसे संभव हैं ? इन शंकाओंका समाधान	"
७९	काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र	१०३
८०	सासादनगुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायगुणस्थान तकके काययोगी जीवोंका क्षेत्र	"
८१	काययोगी सयोगिकेवलीका क्षेत्र	१०४
८२	औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र	"
८३	त्रसपर्याप्तराशिका कितना भाग संचार करता है, इस बातका निरूपण	१०४
८४	सासादनगुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली तकके औदारिक-काययोगी जीवोंका क्षेत्र	१०५
८५	औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्या-दृष्टियोंका क्षेत्र	"
८६	औदारिकमिश्रका वैक्रियिक-समुद्घात आदि पदोंके साथ भेद पाये जानेसे सूत्रोक्त ओघनिर्देश घटित नहीं होता है, इस शंकाका समाधान	१०६
८७	औदारिक मिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयत-सम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवलीका क्षेत्र-निरूपण	"
८८	औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवोंके उपपाद पद क्यों नहीं कहा, इस शंकाका समाधान	१०७
८९	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तकके वैक्रियिककाययोगी जीवोंका क्षेत्र	१०८
९०	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्या-दृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र	१०९
९१	आहारककाययोगी और आहारक-मिश्रकाययोगी प्रमत्तसंयतोंका क्षेत्र	"
९२	कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयत-सम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवलीका क्षेत्र	११०-१११

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	५ वेदमार्गणा	१११-११३
९३	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण तकके स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंका क्षेत्र, तथा तत्सम्बन्धी विशेषताओंका वर्णन	१११
९४	मिथ्यादृष्टयादि नौ गुणस्थानवर्ती नपुंसकवेदी जीवोंका क्षेत्र, तथा तत्सम्बन्धी विशेषताओंका वर्णन	११२
९५	अपगतवेदी जीवोंका क्षेत्र	११३
	६ कषायमार्गणा	११३-११७
९६	क्रोध, मान, माया और लोभकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र	११३
९७	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तकके क्रोध, मान, माया और लोभकषायी जीवोंका क्षेत्र	११४
९८	सूत्रमें ओघपद क्यों नहीं कहा, इस शंकाका समाधान	"
९९	'लोकके असंख्यातवें भागमें' इतना पद ही सूत्रमें कहनेसे प्रकृतमें 'मानुष्यक्षेत्रके भी असंख्यातवें भागमें रहते हैं' यह अर्थ क्यों नहीं लेना चाहिए, इस शंकाका, तथा इसीके अन्तर्गत एक और भी शंकाका समाधान	११५
१००	लोभकषायी सूक्ष्मसाम्परायिक शुद्धिसंयतोंका क्षेत्र	११६
१०१	अकषायी जीवोंका क्षेत्र	"
१०२	उपशान्तकषायी जीवको अकषाय कैसे कहा, इस शंकाका तथा इसीके अन्तर्गत कुछ अन्य भी शंकाओंका समाधान	११७
	७ ज्ञानमार्गणा	११७-१२१
१०३	मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र	११७
१०४	मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका क्षेत्र	११८
१०५	अचेतन और क्षणक्षयी शब्दकी अविनष्टरूपसे अनुवृत्ति कैसे हो सकती है, इस शंकाका समाधान	"
१०६	विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र, तथा स्वस्थानादि पदगत विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीव तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागमें और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें ही क्यों रहते हैं, इस शंकाका समाधान	"
१०७	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायवीतराग-छद्मस्थ गुणस्थान तक मति, श्रुत और अवधिज्ञानी जीवोंका क्षेत्र	११९
१०८	प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीणकषायान्त मनःपर्ययज्ञानी जीवोंका क्षेत्र	"
१०९	पर्यायार्थिक और द्रव्यार्थिकनयी देशनाओंके कहनेका प्रयोजन	१२०
११०	केवलज्ञानी सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिनोंका क्षेत्र	"
१११	स्वस्थानस्वस्थान पदका स्वरूप बतलाकर क्षीणमोही अयोगिकेवलीमें उसकी असंभवताका आपादन और समाधान	१२१

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
	८ संयममार्गणा	१२१-१२५
११२	संयमी जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगी-केवली गुणस्थान तकके जीवोंका क्षेत्र	१२१
११३	द्रव्यार्थिक नयदेशनाका प्रयोजन	१२२
११४	सयोगिकेवलीका क्षेत्र और पृथक् सूत्र निर्माणका प्रयोजन	"
११५	सामायिक और छेदोपस्थापना संयतोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तकके संयत जीवोंका क्षेत्र	१२२-१२३
११६	परिहारविशुद्धिसंयत, सामायिक और छेदोपस्थापना शुद्धिसंयतोंसे पृथग्भूत क्यों नहीं, इस शंकाका समाधान	"
११७	परिहारविशुद्धिसंयमी प्रमत्त और अप्रमत्त संयतोंका क्षेत्र	"
११८	सूक्ष्मसाम्पराय संयमवाले उपशामक और क्षपक जीवोंका क्षेत्र	"
११९	यथाख्यातसंयमी, संयमासंयमी और असंयमी मिथ्यादृष्टि जीवोंकापृथक् क्षेत्र-निरूपण	१२४
१२०	ओघप्ररूपणाके भेद-प्रभेद और प्रकृतमें किस ओघसे प्रयोजन है, यह बताकर तत्सम्बन्धी शंका-समाधान	१२५
१२१	असंयमी सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका क्षेत्र	"
	९ दर्शनमार्गणा	१२६-१२८
१२२	चक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक क्षेत्र-निरूपण	१२६
१२३	लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंमें चक्षुदर्शन पाया जाता है या नहीं, इस शंकाका समाधान	१२६
१२४	अचक्षुदर्शनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकका क्षेत्र-निरूपण	१२७
१२५	अवधिदर्शनी और केवलदर्शनी जीवोंका क्षेत्र	"
	१० लेश्यामार्गणा	१२८-१३१
१२६	कृष्ण, नील और कापोत लेश्यावाले मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका पृथक् पृथक् क्षेत्र-वर्णन	१२८
१२७	तेज और पद्मलेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत तकके जीवोंका क्षेत्र	१२९
१२८	मारणान्तिक समुद्घातगत तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके क्षेत्रमें विशेषता का वर्णन	"
१२९	वैक्रियिक, मारणान्तिक और उपपादपदगत पद्मलेश्यावाले जीवोंमें कौनसी राशि प्रधान है, इस बातका निरूपण	१३०
१३०	शुक्ललेश्यावाले जीवोंमें मिथ्यात्व गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय तकके जीवोंका क्षेत्र	"
१३१	शुक्ललेश्यावाले सयोगिकेवलीका क्षेत्र और अलेश्य जीवोंका क्षेत्र नहीं कहनेका कारण	१३१
	११ भव्यमार्गणा	१३१-१३३
१३२	भव्यसिद्धिक जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीवोंका क्षेत्र	१३१

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
१३३	भव्यसिद्धिक मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र	१३२
१३४	विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकसमुद्घातगत अभव्य जीव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागमें और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, इस बातका सप्रमाण निरूपण	,,
१३५	सादिबंध करनेवाले जीव पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र होते हैं, इस बातका सयुक्तिक वर्णन	१३२-१३३
१३६	एकेन्द्रियोंमें संचित अनन्त सादिबंधकोंमेंसे जगतप्रतरके असंख्यातवें भागप्रमाण सादिबंधक जीव त्रसोंमें क्यों नहीं उत्पन्न होते, इस शंकाका समाधान	१३३
	१२ सम्यक्त्वमार्गणा	**१३३-१३६**
१३७	सामान्य सम्यग्दृष्टि और क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका क्षेत्र	१३३
१३८	वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयत गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तगुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका क्षेत्र	१३४
१३९	उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंमें असंयतगुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तकके जीवोंका क्षेत्र	,,
१४०	मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादगत असंयत उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंकी संख्याका निरूपण	१३५
१४१	उपशम श्रेणीसे उतरकर मरणेवाले उपशमसम्यक्त्वी जीवोंके सिवाय अन्य उपशमसम्यक्त्वी जीवोंका मरण क्यों नहीं होता, इस शंकाका समाधान	१३५
१४२	सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका पृथक् पृथक् क्षेत्रनिरूपण	,,
	१३ संज्ञीमार्गणा	**१३६**
१३५	संज्ञी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके जीवोंका क्षेत्र	,,
१४४	असंज्ञी जीवोंका क्षेत्र	,,
	१४ आहारमार्गणा	**१३७-१३८**
१४५	आहारक जीवोंमें मिथ्यादृष्टिगुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके जीवोंका क्षेत्र-निरूपण	१३७
१४६	अनाहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका क्षेत्र	,,
१४७	अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवलीका क्षेत्र	१३८
१३८	अनाहारक सयोगिकेवलीका क्षेत्र	,,

स्पर्शनानुगम

१

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
	विषयकी उत्थानिका	**१४१-१४५**
१	धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा	१४१
२	स्पर्शनानुगमकी अपेक्षा निर्देशभेद-कथन	,,
३	नामस्पर्शन, स्थापनास्पर्शन, द्रव्यस्पर्शन, क्षेत्रस्पर्शन, काल-	

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
	स्पर्शन और भावस्पर्शन, इन छह प्रकारके स्पर्शनोंका सभेद स्वरूप और नयोंमें अन्तर्भाव	१४१–१४४
४	स्पर्शनशब्दकी निरुक्ति, ओघ-शब्दके एकार्थक नाम और प्रमाणवाक्यके अभावकी आशंकाका समाधान	१४४–१४५
	२	
	ओघसे स्पर्शनानुगमनिर्देश	१४५-१७३
५	मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र निरूपण	१४५
६	स्पर्शनानुयोगद्वारके अवतारकी आवश्यकताका प्रतिपादन	१४५–१४६
७	लोकका प्रमाण-निरूपण	१४६–१४७
८	सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्र	१४८
९	सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	१४९–१६५
१०	सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंका स्वस्थानस्वस्थानक्षेत्र	१४९
११	सासादनसम्यग्दृष्टि ज्योतिष्क देवोंका स्वस्थानक्षेत्र	१५०–१६०
१२	एक चन्द्रके परिवारका प्रमाण	१५१–१५२
१३	ज्योतिष्कदेवोंके सर्व विमानोंका प्रमाण	१५२
१४	स्वयम्भूरमण समुद्रके परभागमें राजुके अर्धच्छेदोंके अस्तित्वकी सिद्धि, तथा परिकर्मसूत्रके साथ उसका विरोध उद्भावन कर उसका परिहार	१५५–१५६
१५	राजुके अर्धच्छेद सर्व द्वीप-सागरोंके प्रमाणसे तत्प्रायोग्य संख्यात रूपाधिक हैं, यह कथन केवल त्रिलोकप्रज्ञप्तिसूत्रके अनुसार है, यह बतलाते हुए असंख्यात आवलियोंके अवहार-कालके तथा आयतचतुरस्र लोक-संस्थानके उपदेशका उल्लेख और स्वकीय निष्पक्ष मनोवृत्तिका परिचय	१५७–१५८
१६	चन्द्रबिम्बशलाकाओंकी उत्पत्ति	१५९
१७	ज्योतिषी देवोंके विमानोंका प्रमाण उत्सेधांगुलसे ही लेना चाहिए, प्रमाणांगुलसे नहीं, अन्यथा जम्बूद्वीप-सम्बन्धी तारे जम्बूद्वीपमें समा नहीं सकते, इस बातका पक्षान्तर स्वीकारके साथ उल्लेख	१६०
१८	सासादनसम्यग्दृष्टि व्यन्तर देवोंका स्वस्थानक्षेत्र निरूपण	१६१
१९	सासादनसम्यग्दृष्टि जीव एकेन्द्रियोंमें उत्पन्न होते हैं, या केवल मारणान्तिकसमुद्घात करते हैं, इस बातका सप्रमाण निर्णय	१६२–१६३
२०	जब कि सासादनसम्यग्दृष्टि देव एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिकसमुद्घात करते हैं, तो फिर सर्वलोकवर्ती एकेन्द्रियोंमें क्यों नहीं करते, इस शंकाका सयुक्तिक समाधान	१६४
२१	सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका बारह बटे चौदह भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र कैसे घटित होता है, वे वायुकायिक जीवोंमें मारणान्तिकसमुद्घात क्यों नहीं करते, इन शंकाओंका समाधान	,,
२२	उपपादगत सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके देशोन ग्यारह बटे चौदह भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्रकी सिद्धि	१६५
२३	जिन आचार्योंका यह अभिमत है कि देव नियमसे मूलशरीरमें प्रविष्ट होकर ही मरण करते हैं, और इसी अपेक्षा उपपादगत सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंका	

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
	स्पर्शनक्षेत्र देशोन दश बटे चौदह भागप्रमाण कहते हैं, उनके कथनका सप्रमाण विरोध-निरूपण	१६५
२४	सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	१६६
२५	संयतासंयत जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	१६७–१७६
२६	स्वयम्भूरमणसमुद्र और स्वयम्प्रभपर्वतके परभागवर्ती क्षेत्रका विष्कम्भ बतलाते हुए संयतासंयत जीवोंके स्वस्थानक्षेत्रकी सप्रमाण सिद्धि	१६८–१६९
२७	प्रमत्तसंयत गुणस्थान लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र, तथा विक्रियादि ऋद्धिसम्पन्न ऋषियोंने सर्व मनुष्यक्षेत्रका स्पर्श किया है, या नहीं; क्या मेरुशिखर तक जाने आनेवाले ऋषि मनुष्यक्षेत्रमें सर्वत्र नहीं जा आ सकते; क्या तिर्यंचोंका भी एक लाख योजन ऊपर तक जाना सम्भव नहीं है, इत्यादि अनेक शंकाओंका समाधान	१७०–१७२
२८	सयोगिकेवलीका स्पर्शनक्षेत्र	,,
	३	
	आदेशसे स्पर्शनक्षेत्र-निर्देश	१७३-३०९
	१ गतिमार्गणा	,, -२४०
	(नरकगति)	,, -१९२
२९	नारकी मिथ्यादृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	१७३
३०	अतीतकालकी विहार-वत्स्वस्थानादि पदगत नारकी मिथ्यादृष्टियोंका स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवें भाग प्रमाण क्यों नहीं, इस शंकाका तथा इसीके अन्तर्गत और भी अनेकों शंकाओंका समधान	१७४
३१	विग्रहगतिमें जीवोंके विग्रह सहेतुक होते हैं, या अहेतुक, इस बातका निर्णय करते हुए नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवगति प्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी प्रकृतियोंके भेदोंका निरूपण और उनके क्षेत्र-विपाकित्वकी सिद्धि	१७५–१७६
३२	सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	१७७
३३	नारकावासोंके आकारोंका तथा वर्तमानकालमें नारकियोंसे रोके हुए क्षेत्रका वर्णन	१७८
३४	सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि नारकियोंका स्पर्शनक्षेत्र बतलाते हुए एक नारकावासका क्षेत्रफल, तथा मारणान्तिक समुद्घातगत असंयत सम्यग्दृष्टि नारकियोंका स्पर्शनक्षेत्र मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा क्यों है, इस बातका अनेक युक्तियोंके साथ समर्थन	१७९–१८२
३५	प्रथम पृथिवीके मिथ्यादृष्टि आदि चारों गुणस्थानवर्ती स्वस्थानादि-पदगत नारकियोंके स्पर्शनक्षेत्रकी सयुक्तिक सिद्धि करते हुए प्रसंगागत मृदंगाकार लोकके अनुसार एक लाख योजन बाहल्य और एक राजु गोल तिर्यग्लोकके प्रमाणका, जगत्श्रेणी जगत्प्रतर, घनलोकका परिकर्मके अवतरण पूर्वक स्वरूप-निरूपण	

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
	करते हुए अनेक युक्तियों और प्रमाणोंसे खंडन	१८२-१८७
३६	द्वितीय पृथिवीसे लेकर छठी पृथिवी तकके मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	१८८-१८९
३७	उक्त पृथिवीयोंके सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि नारकियोंका स्पर्शनक्षेत्र	१८९-१९०
३८	सातवीं पृथिवीके मिथ्यादृष्टि नारकियोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र तथा देशोन क्षेत्रका स्पष्टीकरण	१९०-१९१
३९	सातवीं पृथिवीके सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि नारकियोंका स्पर्शनक्षेत्र	१९१-१९२
	(तिर्यंचगति)	१९२-२१६
४०	तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र, तथा त्रसजीवरहित असंख्यात द्वीप और समुद्रोंमें विहारवत्स्वस्थान पदपरिणत तिर्यंचोंका होना कैसे संभव है, इस शंकाका समाधान करते हुए अतीतकालमें विहार करनेवाले तिर्यंचोंसे स्पर्श किये गये क्षेत्रके निकालनेका विधान	१९२-१९३
४१	सासानदसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	१९३-२०६
४२	जम्बूद्वीपका क्षेत्रफल	१९४
४३	लवणसमुद्रका क्षेत्रफल	१९५
४४	धातकीखंड आदि द्वीपों और कालोदक आदि समुद्रोंके क्षेत्रफलके निकालनेके लिए गुणकार शलाकाओंका निरूपण और उनसे विवक्षित द्वीप और समुद्रके क्षेत्रफल निकालनेका विधान	१९५-१९८
४५	स्वयम्भूरमण समुद्रके क्षेत्रफल निकालनेका विधान	१९८
४६	सर्व समुद्रोंके क्षेत्रफलका संकलन-निरूपण	१९९-२०१
४७	स्वयम्भूरमण समुद्रके अतिरिक्त शेष सर्व समुद्रोंके क्षेत्रफलको निकालनेका विधान	२०२-२०३
४८	सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंच मेरुपमूलसे नीचे मारणान्तिकसमुद्घात क्यों नहीं करते हैं, उनकी भवनवासी देवोंमें उत्पत्ति होती है, कि नहीं; इत्यादि अनेक शंकाओंका समाधान	२०४-२०६
४९	सम्यग्मिथ्यादृष्टि तिर्यंचोंका स्पर्शनक्षेत्र	२०६
५०	असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२०७-२११
५१	नवग्रैवेयकोंमें यदि मिथ्यादृष्टि मनुष्य उत्पन्न होते हैं तो असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंकी उत्पत्ति क्यों नहीं होना चाहिए? यदि कहा जाय कि मिथ्यादृष्टि मनुष्य द्रव्यलिंगसे उत्पन्न होते हैं, तो ये भी द्रव्यलिंगसे ही उत्पन्न होवें? इस शंकाका समाधान	२०८
५२	उपपादपरिणत असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंके स्पर्शनक्षेत्रके करणसूत्र द्वारा निकालनेका विधान	२०९-२१०
५३	विहारवत्स्वस्थानादि पदपरिणत संयतासंयत तिर्यंचोंका स्पर्शनक्षेत्र	२१०-२११

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
५४	मिथ्यादृष्टि पंचेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय-पर्याप्त और योनिमती तिर्यंचोंका वर्तमान और अतीतकालिका स्पर्शनक्षेत्र,	२११–२१२
५५	त्रसनालीके बाहिर त्रसकायिक जीवोंके अभाव होनेसे मारणान्तिक और उपपादगत उक्त तिर्यंच-त्रिकोंका स्पर्शनक्षेत्र सर्व लोक कैसे सम्भव है, इस शंकाका समाधान	२१२
५६	सासादनगुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक उक्त पंचेन्द्रियत्रिकोंका स्पर्शनक्षेत्र	२१३
५७	पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यंचोंका वर्तमानकालिक स्पर्शन-क्षेत्र	,,
५८	पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यंचोंका अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र तथा उसके निकालनेका विधान	२१४
५९	अंगुलके असंख्यातवें भागमात्र अवगाहनावाले लब्ध्यपर्याप्त जीवोंके संख्यात अंगुलप्रमाण उत्सेध कैसे संभव है, इस शंकाका समाधान	,,
६०	महामच्छकी अवगाहनामें एक बन्धनसे बद्ध षट्कायिक जीवोंका अस्तित्व कैसे जाना जाता है, इस शंकाका समाधान	२१५
	(मनुष्यगति)	२१६–२२४
६१	मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२१६–२१७
६२	उक्त तीनों प्रकारके सासादन-सम्यग्दृष्टि मनुष्योंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२१७–२२०
६३	मनुष्योंसे अगम्य प्रदेशवाले कुलाचल आदिके क्षेत्रकी ‘ मनुष्य क्षेत्र ’ यह संज्ञा कैसे है, इस शंकाका समाधान	२१८
६४	मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले नारकी सासादनसम्यग्दृष्टियोंका स्पर्शन-क्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग नहीं हो सकता, इस बातका सयुक्तिक आक्षेप और परिहार	२१८–२२०
६५	सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके मनुष्योंका स्पर्शनक्षेत्र	२२०–२२३
६६	मारणान्तिक समुद्घातगत असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंने तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग कैसे स्पर्श किया, इस शंकाका समाधान	२२१
६७	बद्धायुष्क असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्योंके उपपादक्षेत्रके निकालनेका समाधान	२२१–२२२
६८	सूक्ष्मसे भी सूक्ष्म परिधिक्षेत्रके निकालनेका करणसूत्र	२२१
६९	सयोगिकेवली जिनोंका स्पर्शन-क्षेत्र	२२३
७०	लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंका वर्तमान-कालिक स्पर्शनक्षेत्र	,,
७१	लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंका अतीत-कालिक स्पर्शनक्षेत्र	२२३
	(देवगति)	२२४–२४०
७२	मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि देवोंका वर्तमान-कालिक स्पर्शनक्षेत्र	२२४
७३	उक्त देवोंका अतीत और अनागतकालसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरूपण	२२५
७४	दिशा और विदिशाका स्वरूप, तथा षट्कापक्रमनियमके होनेमें युक्ति	२२६

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
७५	भवनवासियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंचोंका उपपाद सम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्र साधिक पांच राजु क्यों नहीं होता, इस शंकाका समाधान	२२६-२२७
७६	सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके वर्तमान तथा अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरूपण	२२७
७७	मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक, देवोंके वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सयुक्तिक निरूपण	२२८-२२९
७८	उक्त देवोंके अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरूपण	२२९-२३२
७९	उपपादपदगत मिथ्यादृष्टि भवनवासी देवोंके स्पर्शनक्षेत्रसम्बन्धी अनेक अपूर्व शंकाओंका समाधान	२३०
८०	मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि व्यन्तर देवोंके स्वस्थानादि पदोंके स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरूपण	२३०-२३१
८१	उपपादकी अपेक्षा तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र वर्तमानकालमें व्याप्त करके स्थित व्यन्तरदेव अतीतकालमें कैसे तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागको स्पर्श करते हैं, इस शंकाका सयुक्तिक समाधान	२३१
८२	व्यन्तरोंके प्रसंगोपात्त आवासस्थानोंका निरूपण	२३२
८३	उपपादगत ज्योतिष्क देवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२३२-२३३
८४	सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२३३-२३४
८५	सौधर्म और ईशानकल्पवासी देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२३४-२३६
८६	इन्द्रक, श्रेणीबद्ध और प्रकीर्णक विमानोंके विस्तारका निरूपण	२३४
८७	सौधर्मादि सर्व कल्पोंके विमानोंकी संख्याका निरूपण	२३५-२३६
८८	सौधर्मकल्पवासी देवोंका स्पर्शनक्षेत्र देवोंके ओघस्पर्शनके समान क्यों है, इसका सोपपत्तिक निरूपण	२३६
८९	सनत्कुमारकल्पसे लेकर सहस्रारकल्प तकके मिथ्यादृष्टि आदि चारों गुणस्थानवर्ती देवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२३७-२३८
९०	आनतकल्पसे लेकर अच्युतकल्प तकके मिथ्यादृष्टि आदि चारों गुणस्थानवर्ती देवोंके वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरूपण	२३८-२३९
९१	नवग्रैवेयकोंके मिथ्यादृष्टि आदि चारों गुणस्थानवर्ती देवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२३९
९२	नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२४०
	२ (इन्द्रियमार्गणा)	२४०-२४६
९३	बादर, सूक्ष्म और पर्याप्त अपर्याप्त एकेन्द्रिय जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२४०-२४२
९४	बादर एकेन्द्रिय और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र सामान्य लोक आदि	

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
	तीन लोकोंके संख्यातवें भाग क्यों है, इस शंकाका समाधान	२४१
९५	सामान्य एवं पर्याप्त और वर्तमानकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२४२
९६	उक्त तीनों प्रकारके विकलत्रय जीवोंके अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरूपण	२४३
९७	पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंके वर्तमान तथा अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरूपण	२४४
९८	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रियपर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२४५
९९	लब्ध्यपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२४६
	३ (कायमार्गणा)	२४७–२५५
१००	सामान्य तथा बादर पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर, तथा इन्हींके अपर्याप्त जीव, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्मजलकायिक, सूक्ष्मअग्निकायिक, सूक्ष्मवायुकायिक और इन्हींके पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२४७
१०१	उक्त जीवोंने तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र कैसे स्पर्श किया है, यह बतलाते हुए आठों पृथिवीयोंकी लम्बाई चौड़ाई और मोटाईका निरूपण	२४७-२४८
१०२	बादर तेजस्कायिक और वायुकायिक जीवोंके वैक्रियिकसमुद्घातसम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक वर्णन	२४९–२५०
१०३	बादर पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक और वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवोंके वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका तथा तदन्तर्गत शंका-समाधानोंका सप्रमाण वर्णन	२५०–२५२
१०४	बादर वायुकायिकपर्याप्त जीवोंका वर्तमान तथा अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२५२–२५३
१०५	वनस्पतिकायिक, निगोद, तथा उनके बादर, सूक्ष्म और पर्याप्त-अपर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२५३–२५४
१०६	त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्त जीवोंके मिथ्यादृष्टि आदि चौदहों गुणस्थानों सम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्रका निरूपण	२५४
१०७	त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२५४–२५५
	४ योगमार्गणा	२५५–२७१
१०८	पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२५५–२५६
१०९	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पांचों मनोयोगी और पांचों वचनयोगी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२५६–२५७
११०	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायगुणस्थान तक	

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
	काययोगी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२५८
१११	काययोगी सयोगिकेवलीका स्पर्शनक्षेत्र, तथा पृथक् सूत्र-द्वारा बतलानेका सयुक्तिक कारण-निरूपण	२५८-२५९
११२	औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२५९-२६०
११३	औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२६०-२६१
११४	औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२६१-२६२
११५	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके औदारिककाययोगी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२६२-२६३
११६	औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२६३-२६४
११७	औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जीवोंके स्पर्शनक्षेत्रका तदन्तर्गत शंका-समाधान पूर्वक सोपपत्तिक निरूपण	२६४-२६५
११८	वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र सोपपत्तिक निरूपण	२६६
११९	वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२६७-२६८
१२०	वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२६८-२६९
१२१	आहारकाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी प्रमत्तसंयतोंका स्पर्शनक्षेत्र	२६९
१२२	कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२६९-२७०
१२३	कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका वर्तमान तथा अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२७०-२७१
१२४	कार्मणकाययोगी सयोगीकेवलीका स्पर्शनक्षेत्र	२७१
	५ वेदमार्गणा	२७१-२७९
१२५	स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका सयुक्तिक निरूपण	२७१-२७२
१२६	स्त्री और पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्रका तदन्तर्गत शंका-समाधानके साथ निरूपण	२७२-२७४
१२७	स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि तथा असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२७४
१२८	स्त्री और पुरुषवेदी संयतासंयतोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२७४-२७५
१२९	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशामक और क्षपक गुणस्थान तक स्त्री और पुरुषवेदी जीवोंका तदन्तर्गत	

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
	विशेषताओंके साथ स्पर्शनक्षेत्रका वर्णन	२७५-२७६
१३०	नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके तदन्तर्गत शंका-समाधानके साथ स्पर्शनक्षेत्रका निरूपण	२७६
१३१	नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२७६-२७७
१३२	सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तकके नपुंसकवेदी जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२७७-२७९
१३३	अपगतवेदी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२७९
	६ (कषायमार्गणा)	२८०-२८१
१३४	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतकके चारों कषायवाले जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२८०
१३५	लोभकषायवाले सूक्ष्मसाम्परायगुणस्थानवर्ती उपशामक और क्षपक जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	"
१३६	उपशान्तकषाय आदि अन्तिम चार गुणस्थानवाले अकषायी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२८०-२८१
	७ (ज्ञानमार्गणा)	२८१-८२५
१३७	मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि मत्यज्ञानी तथा श्रुताज्ञानी जीवोंके स्पर्शनक्षेत्रका तदन्तर्गत शंका-समाधानपूर्वक निरूपण	२८१-२८२
१३८	विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके स्पर्शनक्षेत्रका तदन्तर्गत शंका-समाधानपूर्वक निरूपण	२८२-२८३
१३९	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायगुणस्थान तकके मति, श्रुत और अवधिज्ञानी जीवोंके स्पर्शनक्षेत्रका तदन्तर्गत शंका-समाधानपूर्वक निरूपण	२८३-२८४
१४०	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके मनःपर्ययज्ञानी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२८४
१४१	केवलज्ञानी सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिनोंका स्पर्शनक्षेत्र	२८४-२८५
	८ संयममार्गणा	२८५-२८८
१४२	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके संयत जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२८५-२८६
१४३	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तकके सामायिक और छेदोपस्थापना संयमी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२८६
१४४	प्रमत्त और अप्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती परिहारविशुद्धिसंयतोंका स्पर्शनक्षेत्र	"
१४५	उपशामक और क्षपक सूक्ष्मसाम्परायसंयमी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२८७
१४६	अन्तिम चार गुणस्थानवर्ती यथाख्यातसंयमी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	"
१४७	संयमासंयमवाले जीवोंका तदन्तर्गत शंका-समाधानके साथ स्पर्शनक्षेत्र-निरूपण	"
१४८	मिथ्यादृष्टि आदि चार गुणस्थानवर्ती असंयत जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२८८

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
	९ दर्शनमार्गणा	**२८८-२९०**
१४९	चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२८८
१५०	सासादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थान से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके चक्षुदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२८९
१५१	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके अचक्षुदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	"
१५२	अवधिदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	"
१५३	केवलदर्शनी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	२९०
	१० लेश्यामार्गणा	**२९०-३०१**
१५४	कृष्ण, नील और कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंका सोपपत्तिक स्पर्शनक्षेत्र	२९०
१५५	उक्त तीनों अशुभलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२९१-२९३
१५६	देवोंसे एकेन्द्रियोंमे मारणान्तिक समुद्धात करनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका तीनों अशुभ लेश्यासम्बन्धी स्पर्शनक्षेत्र यथाक्रमसे बारह बटे चौदह भाग, ग्यारह बटे चौदह भाग और नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्यों नहीं पाया जाता, इस शंकाका समाधान	२९२
१५७	कृष्ण, नील और कापोत लेश्यावाले तथा एकेन्द्रियोंमें मारणान्तिक समुद्धात करनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंच और मनुष्योंका स्पर्शनक्षेत्र क्रमशः बारह बटे चौदह, ग्यारह बटे चौदह और नौ बटे चौदह भागप्रमाण क्यों नहीं पाया जाता, इस शंकाका समाधान	२९२
१५८	तिर्यंचगतिमें उत्पन्न होनेवाले देवोंके तीनों अशुभलेश्याओंका उपपादपदसम्बन्धी क्रमशः ग्यारह बटे चौदह, दश बटे चौदह और आठ बटे चौदह भागप्रमाण क्षेत्र क्यों नहीं पाया जाता, इस शंकाका समाधान	२९२
१५९	उक्त तीनों अशुभलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका सयुक्तिक स्पर्शनक्षेत्र	२९३-२९४
१६०	तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२९४-२९५
१६१	तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२९५-२९६
१६२	तेजोलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२९६-२९७
१६३	तेजोलेश्यावाले प्रमत्त और अप्रमत्त संयतोंका स्पर्शनक्षेत्र	२९७
१६४	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तकके पद्मलेश्यावाले जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	२९७-२९८

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
१६५	पद्मलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंका वर्तमान और अतीत अनागतकालसंबंधी स्पर्शनक्षेत्र	२९८
१६६	पद्मलेश्यावाले प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका स्पर्शनक्षेत्र	२९९
१६७	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तकके शुक्ललेश्यावाले जीवोंका वर्तमान और अतीत-अनागतकाल-संबंधी स्पर्शनक्षेत्र	२९९-३००
१६८	शुक्ललेश्यावाले तिर्यंच, शुक्ललेश्यावाले देवोंमें क्यों नहीं उत्पन्न होते हैं, इस शंकाका समाधान	३००
१६९	उपपादपदपरिणत शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके तथा मारणान्तिकपदपरिणत शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके देशोन छह बटे चौदह भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्रका सोपपत्तिक निरूपण	,,
१७०	प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके शुक्ललेश्यावाले जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	३००-३०१
	११ भव्यमार्गणा	३०१
१७१	मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके भव्यजीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	३०१
१७२	अभव्य जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	,,
	१२ सम्यक्त्वमार्गणा	३०२-३०६
१७३	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके सम्यक्त्वी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	३०२
१७४	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती क्षायिक सम्यक्त्वी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	३०२
१७५	उपपादपदगत असंयत क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण कैसे है, इस शंकाका समाधान	३०२-३०३
१७६	संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके क्षायिकसम्यक्त्वी जीवोंका सोपपत्तिक स्पर्शनक्षेत्र-वर्णन	३०३-३०४
१७७	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तकके वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	३०४
१७८	असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानवर्ती औपशमिकसम्यक्त्वी जीवका स्पर्शनक्षेत्र, तथा उसके ओघके समान कहनेमें उपस्थित आपत्तिका परिहार	३०४-३०५
१७९	संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तकके उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	३०५
१८०	सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीवोंका पृथक् पृथक् स्पर्शनक्षेत्र	३०६
	१३ संज्ञिमार्गणा	३०६-३०७
१८१	संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंका वर्तमान और अतीतकालिक स्पर्शनक्षेत्र	३०६-३०७
१८२	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके संज्ञी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	,,

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
१८३	असंज्ञी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	
	१४ आहारमार्गणा	३०८-३०९
१८४	आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	३०८
१८५	आहारमार्गणाकी अपेक्षा उपपादपदका राजुप्रमाण आयाम नहीं पाया जाता, अतः सर्वलोक प्रमाण स्पर्शनक्षेत्रके अभाव होनेसे ओघपणा नहीं बनता है, इस शंकाका समाधान	,,
१८६	सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकका स्पर्शनक्षेत्र	,,
१८७	अनाहारक जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र	३०९
	कालानुगम	
	१	
	विषयकी उत्थानिका	३१३-३२३
१	धवलाकारका मंगलाचरण और प्रतिज्ञा	३१३
२	कालानुगमकी अपेक्षा निर्देशभेद निरूपण	,,
३	नामकाल, स्थापनाकाल, द्रव्यकाल और भावकाल, इन चार प्रकारके कालनिक्षेपोंका सभेद स्वरूप-निरूपण	३१३-३१७
४	तद्व्यतिरिक्त नोआगमद्रव्यकालका स्वरूप और उसकी पुष्टिमें पंचास्तिकायप्राभृत, जीवसमास और आचारांगकी गाथाओंका उल्लेख	३१४-३१६
५	द्रव्यकालके अस्तित्वकी समर्थन करते हुए तत्त्वार्थसूत्रका सूत्रप्रमाण-निरूपण	३१६
६	प्रकृत जीवस्थान आदिमें द्रव्यकालके न कहनेका कारण	,,
७	व्यवहारकालके अस्तित्वकी पुष्टिमें पंचास्तिकायप्राभृतकी गाथाओंका उल्लेख	३१७
८	प्रकृतमें नोआगमभावकालका प्रयोजन और उसके समय, आवली, मुहूर्त वर्ष आदि स्वरूप होनेका निरूपण	,,
९	कालशब्दकी निरुक्ति और उसके पर्यायवाची नामोंका निरूपण	३१७-३१८
१०	समय, आवली, उच्छ्वासनिःश्वास स्तोक, लव, नाली, मुहूर्त और दिवसके कालप्रमाणका सप्रमाण निरूपण	३१८
११	दिन और रात्रिसम्बन्धी तीस मुहूर्तोंके नाम	३१८-३१९
१२	पक्षका प्रमाण और दिवसोंके नाम	३१९
१३	मास, वर्ष और युग आदिका स्वरूप	३२०
१४	निर्देश, स्वामित्व आदि प्रसिद्ध छह अनुयोगद्वारोंसे कालका स्वरूप-निरूपण	३२०-३२२
१५	यदि काल एकमात्र मनुष्यक्षेत्रसे सूर्यमंडलमें ही अवस्थित है, तो उसके द्वारा छह द्रव्योंके परिणाम कैसे प्रकाशित किये जा सकते हैं, इस शंकाका समाधान	३२०
१६	देवलोकमें तो दिन-रात्रिरूप कालका अभाव है, फिर वहां पर कालका व्यवहार कैसे होता है, इत्यादि कालसम्बन्धी अनेकों शंकाओंके अपूर्व समाधान	३२१
१७	निर्देशके पर्यायवाची नाम बतलाकर दोनों प्रकारके निर्देशोंकी सार्थकताका निरूपण	३२२-३२३

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
	२	
	ओघसे कालानुगमनिर्देश	३२३-३५७
१८	मिथ्यादृष्टि जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा कालनिरूपण	३२३
१९	एक जीवकी अपेक्षा कालके तीन भेदोंका सदृष्टांत उल्लेख और प्रकृतमें सादि-सान्त कालकी अपेक्षा जघन्यकालका निरूपण	३२४
२०	सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंको भी मिथ्यात्व गुणस्थानमें पहुंचा कर उसका जघन्यकाल क्यों निरूपण	३२५
२१	एक जीवकी अपेक्षा उत्कृष्ट सादि-सान्त मिथ्यात्वकालका निरूपण	,,
२२	अर्धपुद्गलपरिवर्तनका स्वरूप बतलाते हुए पांच प्रकारके परिवर्तनोंका नामोल्लेख कर द्रव्यपरिवर्तनका विशद स्वरूप-निरूपण	३२५-३२६
२३	यदि जीवने आज तक भी समस्त पुद्गल भोगकर नहीं छोड़े हैं, तो 'सव्वे वि पोग्गला खलु' इत्यादि सूत्र-गाथाके साथ विरोध क्यों नहीं होगा, इस शंकाका समाधान	३२६
२४	प्रथम समयमें गृहीत पुद्गल-पुंज द्वितीय समयमें निर्जीर्ण हो, अकर्मरूप अवस्थाको धारण कर, पुनः तृतीय समयमें उसी जीवमें जाता है, यह कैसे जाना, इस शंकाका समाधान	३२७
२५	पुद्गलपरिवर्तनकालके तीन प्रकारोंका स्वरूप	३२८
२६	पुद्गलपरिवर्तनके स्वरूपका बोधक यंत्र	३३०
२७	अगृहीत, मिश्र और गृहीत संबंधी तीनों प्रकारके कालोंका सकारण अल्पबहुत्व-निरूपण	३३१
२८	नोकर्मपुद्गलपरिवर्तनके समान ही कर्मपुद्गलपरिवर्तनके स्वरूपका उल्लेख और तत्सम्बन्धी विशेषताओंका निरूपण	३३२
२९	क्षेत्र, काल, भव और भाव-पुद्गलपरिवर्तनोंका सूत्रगाथाओं द्वारा स्वरूप-निरूपण	३३३-३३४
३०	एक जीवकी अपेक्षा पांचों परिवर्तनवारोंका अल्पबहुत्व	३३४
३१	पांचों परिवर्तनोंका कालसंबंधी अल्पबहुत्व	,,
३२	सादि-सान्त मिथ्यात्वके कुछ कम अर्धपुद्गलपरिवर्तन कालका निदर्शन	३३५
३३	सम्यक्त्वकी उत्पत्ति और मिथ्यात्वका विनाश, इन दोनों विभिन्न कार्योंका एक समय कैसे हो सकता है; इस शंकाका समाधान	,,
३४	मिथ्यात्व नाम पर्यायका है, वह पर्याय उत्पाद विनाशात्मक है, क्योंकि, उसमें स्थितिका अभाव है। और यदि उसकी स्थिति भी मानते हैं, तो मिथ्यात्वके द्रव्यपना प्राप्त होता है, इस शंकाका समाधान	३३६-३३७
३५	अनन्तका स्वरूप और उसके प्रमाणमें आर्षगाथाका उल्लेख	३४८
३६	व्ययसहित अर्धपुद्गलपरिवर्तन आदि राशियोंके अनन्तपना किस अपेक्षासे है, इसका स्पष्टीकरण	,,
३७	अक्षय अनन्त राशिका विवेचन	३३९

क्रम नं.	विषय	पृ. नं.
३८	सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा सोपपत्तिक जघन्य कालनिरूपण	३३९
३९	उक्त जीवोंके उत्कृष्ट कालका सयुक्तिक कालवर्णन	३४०
४०	एक जीवकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टियोंके जघन्य कालका निरूपण	३४१
४१	उपशमसम्यक्त्वकालके अधिक माननेमें क्या दोष है, इस शंकाका समाधान करते हुए सासादनगुणस्थानके कालका सप्रमाण निरूपण	"
४२	एकजीवकी अपेक्षा सासादनसम्यग्दृष्टियोंके उत्कृष्ट कालका सप्रमाण निरूपण	३४२
४३	सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा जघन्य काल	३४२-३४३
४४	अप्रमत्तसंयत जीव सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानको क्यों नहीं प्राप्त होते, इस शंकाका समाधान	३४३
४५	सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव अपना काल पूरा कर पीछे संयमको, अथवा संयमासंयमको क्यों नहीं प्राप्त होता, इस शंकाका समाधान	"
४६	नाना जीवोंकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंका उत्कृष्ट काल	३४४
४७	एक जीवकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके जघन्य कालका तदन्तर्गत शंका-समाधानपूर्वक निरूपण	"
४८	एक जीवकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके उत्कृष्ट कालका सोपपत्तिक प्रतिपादन	३४५
४९	असंयतसम्यग्दृष्टियोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, तथा तत्सम्बन्धी अनेकों शंकाओंका समाधान	३४५-३४६
५०	एक जीवकी अपेक्षा असंयतसम्यग्दृष्टियोंके जघन्य कालका सनिदर्शन निरूपण	३४६-३४७
५१	एक जीवकी अपेक्षा असंयतसम्यग्दृष्टियोंके जघन्य कालका तदन्तर्गत शंका-समाधानपूर्वक सोपपत्तिक निरूपण	३४७-३४८
५२	संयतासंयत जीवोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा काल	३४८
५३	एक जीवकी अपेक्षा संयतासंयतोंका जघन्य काल	३४९
५४	सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव संयमासंयमको क्यों नहीं प्राप्त होता, इस शंकाका समाधान	"
५५	एक जीवकी अपेक्षा संयतासंयतोंका उत्कृष्ट काल	३५०
५६	प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका नाना जीवोंकी अपेक्षा कालनिरूपण	३५०
५७	एक जीवकी अपेक्षा प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंके जघन्य कालका सोपपत्तिक निरूपण	३५०-३५१
५८	एक जीवकी अपेक्षा प्रमत्त और अप्रमत्तसंयतोंका उत्कृष्ट काल	३५१
५९	चारों उपशामकोंका नाना जीवोंकी जघन्य काल	३५२
६०	अप्रमत्तसंयतको अपूर्वकरण गुणस्थानमें ले जाकर और द्वितीय समयमें मरण कराके अपूर्वकरण गुणस्थानके एक समयकी प्ररूपणा क्यों नहीं की, इस शंकाका समाधान	"
६१	नाना जीवोंकी अपेक्षा चारों उपशामकोंके उत्कृष्ट कालका सोपपत्तिक निरूपण	३५२-३५३